Economic Issues and Vocabulary

Topic Specific Languages – III
Economic Matters - 1

Copyright © 2009 Jishnu Shankar

Credited downloads allowed for non-commercial purposes

हिन्दी उर्दू फ़्लैगशिप
HINDI URDU FLAGSHIP
THE UNIVERSITY OF TEXAS AT AUSTIN
اُردو ہندی فلیگشِپ

Credits and References

Authentic Materials presented with permission from:

Name	Source
Hindustan	Hindustan e-paper - http://epaper.hindustandainik.com/Default.aspx
Nai Dunia	Leading National Hindi Daily, published from Delhi and other major cities of India - http://epaper.naidunia.com/epapermain.aspx
References	
Snell, Rupert and Simon Weightman.	2003. Teach Yourself Hindi. Chicago: McGraw Hill.
Jain, Usha.	1995. Introduction to Hindi Grammar. Berkeley: University of California.

Instructions - II

१. क्या आप समझ सकते हैं कि ये विज्ञापन किन चीज़ों के बारे में हैं?

२. उन चीज़ों के बारे में क्या-क्या कहा जा रहा है?

३. क्या इन विज्ञापनों के आधार पर आप ऐसी ही किसी चीज़ के लिये अपना विज्ञापन बना सकते हैं?

आर्थिक निर्देश

आर्थिक निर्देश

मैं व्यापार का भविष्य बताता हूँ.
मैं हिंदी हूँ.
बिज़नेस स्टैंडर्ड
सेंसेक्स, निफ्टी नए शिखर पर
Your trust
व्यापार जगत का हर मोड़, हर किस्सा अब आप तक आएगा - न सिर्फ़ आपके पसंदीदा अख़बार में, पर आपकी अपनी भाषा में. जिससे आप व्यापार का हर दाव-पेंच समझें, अपनाएं और जीवन में समृद्धि लाएं.
बिज़नेस स्टैंडर्ड
बेहतर बिज़नेस वो, जो आपकी भाषा में हो.

आर्थिक निर्देश

व्यापार जगत का हर मोड़, हर किस्सा अब आप तक आएगा - न सिर्फ़ आपके पसंदीदा अख़बार में, पर आपकी अपनी भाषा में. जिससे आप व्यापार का हर दाव-पेंच समझें, अपनाएं और जीवन में समृद्धि लाएं.

बिज़नेस स्टैंडर्ड

बेहतर बिज़नेस वो, जो आपकी भाषा में हो.

आर्थिक निर्देश

सपने तो सब दिखाते हैं, लेकिन उन्हें सच करने की तरकीब कितने लोग बताते हैं? मंजिल की ओर इशारा करना तो आसान है, लेकिन उस तक पहुंचाने वाली डगर कौन दिखाएगा? कामयाबी के गुण तो सब गाएंगे, लेकिन उसकी तैयारी कौन कराएगा? हिन्दुस्तान ने शुरूआत की है। तैयारी के ये दो पन्ने उन पाठकों के नाम हमारा प्रेमपत्र हैं, जो जीवन में कुछ बनना चाहते हैं। जो जिंदगी की ट्रेन में बोगी का नहीं, इंजन का रोल निभाना चाहते हैं। लेकिन न तो हम बुजुर्गों की तरह नसीहत देंगे, न ही टीचर की तरह पाठ पढ़ाएंगे। हम दोस्त की तरह गुफ्तगू करेंगे। सोमवार से शनिवार तक, हर रोज़, क्रमशः पढ़िए पॉपुलर साइंस, अध्यात्म, हेल्थ-फिटनेस, जॉब-कॅरियर, करंट अफेयर्स और पर्सनल फाइनेंस पर विशेष न्यूज फीचर। हर शब्द आपको समर्थ बनाने वाला। हर लाइन आपकी तरक्की पर कुर्बान। पढ़ते रहिए हिन्दुस्तान।

निवेशक बचें इन 25 गलतियों से

कई बार निवेशक ऐसी भूल कर जाते हैं जिससे उनको अच्छा खासा चूना लग जाता है। जरूरी नहीं ये बड़ी हों, छोटी भी हो सकती हैं। पैसा कमाने की राह में ऐसी गलतियां कदम-कदम पर आपके रास्ते में आएंगी। जरूरत है इन्हें पहचानने और सही रास्ता अख्तियार करने की। इस सही रास्ते की जानकारी दे रहे हैं **राकेश तनेजा**

1. ईजी मनी का चक्कर

यह गलत धारणा है कि रियल एस्टेट या स्टॉक मार्केट या किसी अन्य एसेट क्लास में आसानी से पैसा बनाया जा सकता है। आसानी से पैसा कमाने के चक्कर में ढेरों पेंच होते हैं। दूर से दिखता तो सुहाना है, पर असलियत तभी पता चलती है जब मैदान में उतरा जाता है। पहला उसूल है हर निवेश के नियम होते हैं। सच्चाई जाने बिना किसी की कोरी बयानबाजी के आधार पर निवेश करना मेहनत से कमाए पैसे को फिजूल करने जैसा होगा।

2. बिना योजना निवेश

जैसी प्लानिंग युद्ध में होती है ठीक उसी तरह निवेश में भी फूल प्रूफ प्लानिंग की जरूरत होती है। सबसे पहले अपना निवेश का उद्देश्य तय करें जैसे शार्ट टर्म, मीडियम टर्म या लांग टर्म। परिवार संग छुट्टियों पर जाना है उसके लिए पैसा चाहिए- शार्ट टर्म, घर या प्रॉपर्टी खरीदनी है- यह हुआ मीडियम टर्म और रिटायरमेंट की प्लानिंग करनी है वह हुई लांग टर्म रणनीति। इन्हीं के आधार पर निवेश करना चाहिए। कई बार निवेशक शुरूआत तो सही करते हैं पर आगे चलकर उद्देश्य से भटक जाते हैं। जरूरत इस पर लगाम लगाने की है।

3. जोखिम से आंख मूंदना

लोग कई बार दोस्तों, परिवार के किसी सदस्य या निवेश सलाहकार के कहने पर बेहतर लाभ के आकर्षण में किसी भी निवेश स्कीम में पैसा लगा देते हैं। पैसे के बारे में ऐसी लापरवाही ठीक नहीं। निवेश करने से पहले हमेशा उसके जोखिम की जानकारी प्राप्त करनी चाहिए। निवेश से जुड़े जोखिम का पता लगाकर आप अपने पैसे को सुरक्षित ही तो कर रहे हैं। जैसे इक्विटी मार्केट, इक्विटी म्युचुअल फंड की तुलना में डेट फंड का जोखिम काफी हद तक कम होता है। जोखिम तय करने के लिए आपकी उम्र भी एक बड़ा फैक्टर होगी। अगर आप रिटायरमेंट के पास पहुंच रहे हैं तो जोखिम का खेल आपके लिए नहीं होगा।

4. एक ही जगह पैसा लगाना

पुरानी कहावत है सारे अंडे एक ही टोकरी में नहीं रखे जाने चाहिए। निवेश के मामले में यह बात सोलह आने सही बैठती है। किसी एक सेक्टर में जरूरत से ज्यादा निवेश करने से बचा जाना चाहिए। कई साल से अंडरपरफार्म कर रहे एसेट क्लास में निवेश करने से बचें। रियल एस्टेट में ज्यादा निवेश करने से मार्केट में तेजी से बढ़ती ब्याज दरें आपके निवेश पोर्टफोलियो का आकर्षण कम कर सकती हैं। इसलिए एनएससी, प्रॉपर्टी, म्युचुअल फंड, इक्विटी, गोल्ड और बीमा-रिटायरमेंट फंड में निवेश करना चाहिए।

5. घर में नहीं दाने, अम्मा चली भुनाने

सच है। निवेश करना कोई स्टेटस सिम्बल नहीं। किसी भी तरह की भेड़चाल गहरी खाई की तरफ धकेल सकती है। अगर आपके पास फालतू पैसा यानी स्पेयर मनी है तो आप निवेश कीजिए। बैंक, क्रेडिट कार्ड, मार्जिन मनी या मित्र से उधार लेकर किया गया निवेश पसीने छुड़ा देगा। बैंक और क्रेडिट कार्ड का ब्याज आपकी रिटर्न से ज्यादा होगा। मित्र जरूरत पड़ने पर कभी भी तकादा कर सकता है। मान लीजिए मार्केट कंडीशन आपके निवेश स्तर से नीचे है तो जबरदस्ती सेलिंग कर लॉस बुक करना पड़ेगा। बैंक के जरिए मार्जिन मनी के बूते खेलने का मतलब है अपनी गर्दन ब्रोकर के हाथ में दे देना। मार्केट ठीक होता है तो कोई बात नहीं। मार्केट में हिचकोले आने पर सबसे पहले मार्जिन मनी वाले क्लाइंट को निचोड़ा जाता है। ऐसे में पैसा अपनी जेब के हिसाब से लगाया जाना चाहिए।

6. निवेश और बीमा में फर्क न समझना

निवेश और बीमा में फर्क समझना होगा। एक तरफ जहां बीमा को निवेश मानना गलत है वहीं दूसरी ओर निवेश को फाइनेंशियल सिक्योरिटी मानना उससे बड़ी भूल है। कई एक्सपर्ट मानते हैं कि यूलिप में निवेश तभी किया जाए जब अन्य निवेश में आप टॉपअप हो चुके हों। इनकी लागत, लिक्विडिटी और स्कीम से निकलने की जटिल प्रक्रिया इन्हें आकर्षक बीमा उत्पाद नहीं बनाती। इसके बजाय प्योर टर्म प्लान बीमा करवाना चाहिए और पैसे स्टॉक या म्युचुअल फंड में डालना चाहिए।

7. आंख मूंद कर निवेश करना

एक ही झटके में रातोरात छप्पर फाड़ पैसा कमाने के बजाय लांग टर्म का नजरिया रखना चाहिए। ऐसा नजरिया जो आपकी वित्तीय जरूरतों के आधार पर बना हो। लम्बी योजना के लिए उस निवेश की बारीकियों को समझना जरूरी है। निवेश की बारीकी समझने का मतलब है इस दौरान उसका बिजनेस, उसकी विकास संभावनाएं और उस अवधि के माइक्रो-इकॉनमिक फैक्टर क्या हो सकते हैं। कई निवेश आकर्षक लगते हैं जैसे मान लीजिए इक्विटी मार्केट एक साल में 20 फीसदी रिटर्न देती है। आप पोर्टफोलियो में खरीद-फरोख्त करते रहे, ब्रोक्रेज के रूप में खर्चा 10 फीसदी बैठा तो आपका रिटर्न आधा रह जाएगा। रिटर्न का कैलकुलेशन करना जरूरी है।

8. पिछली परफोर्मेंस में इनवेस्ट करना

निवेश हमेशा भविष्य पर नजर रख कर करना ही ठीक रहता है। किसी भी सेक्टर या इंडस्ट्री के डायनेमिक्स को ध्यान में रखकर पैसा लगाया जाए न कि पिछली परफोर्मेंस के आधार पर। जरूरी नहीं है कि पिछली कमाई किसी कम्पनी के लिए भविष्य की गारंटी हो। हो सकता है पिछला ट्रेक रिकार्ड भविष्य में दोहराया न जा सके। आईटी इंडस्ट्री की पिछली परफोर्मेंस पर पैसा लगाने वाले निवेशक 2006 के बाद से आज तक अपना खरीद मूल्य देखने को तरस रहे हैं।

9. आइंस्टाइन से न सीखना

अलबर्ट आइंस्टाइन ने कहा था कि कैपिटल की कम्पाउंडिंग दुनिया का आठवां अजूबा है चूंकि इससे पूंजी सिस्टेमैटिक तरीके से बढ़ती है। यहां तक कि पांचवीं का बच्चा भी बता सकता है कि कम्पाउंडिंग के क्या फायदे हैं। ज्यादातर रिटेल निवेशक इसकी अनदेखी करते हैं। इसमें आप पैसे को लम्बे समय तक बिना छेड़े निवेश करते हैं। जितनी जल्दी आप निवेश करना शुरू करेंगे उतनी बड़ी पूंजी के मालिक आप बन जाएंगे। तो बड़ी पूंजी निवेश करने के चक्कर में छोटे-छोटे निवेश के अवसर न गवांएं। छोटी राशि से शुरुआत करें। समय के साथ उसे बढ़ता देखें।

10. टिप्स के चक्कर में पड़ना

इक्विटी मार्केट में रोजाना मिलने वाले टिप्स से बचकर रहना चाहिए। टिप्स के भरोसे पैसा लगाना खतरे वाला खेल होता है। कौन सी टिप पैसा डुबा देगी, कहा नहीं जा सकता है। टिप्स का खेल ऑपरेटर और ब्रोकर मिलकर खेलते हैं। अगर एक हफ्ते में 10 टिप आपको भेजी जाती हैं तो उनमें चार-पांच में आप पैसा बना भी लें तो बाकी की टिप पैसा फंसा देने वाली होती हैं। यह एक तरह का ट्रैप होती हैं। इन्हें डिस्ट्रीब्यूशन टिप्स कहा जाता है।

11. तारे ज़मीन पर लाने की सोचना

बुल मार्केट में रिटेल निवेशक सोचते हैं कि वे जीनियस हैं- जहां हाथ डालते हैं सोना निकलता है। अपनी क्षमताओं पर जरूरत से ज्यादा विश्वास यानी ओवर-कांफिडेंस जोखिम को समझने की शक्ति को शिथिल कर देता है। हर नया निवेशक पहली बार मोटा हाथ मारने के बाद खुद को एक्सपर्ट से दो कदम आगे समझने लगता है और झोंक देता है गलत जगह पर पैसा। पैसा लगाते समय वाजिब लाभ के लक्ष्य रखें। ऐसा न सोचें कि इस बार पूरा पैसा लगाकर रातोरात छप्पर फाड़ कर कमा लूंगा। पैसा लगाते समय अगर-मगर के आधार पर सोचना जरूरी होता है।

12. हर गेंद पर छक्का मारने की जिद

अच्छे बल्लेबाज जानते हैं कि कई गेंद खेलने लायक नहीं होतीं। कौन सी हिट करनी है कौन सी छोड़नी है यह फैसला करना आना चाहिए। वही अपेक्षा स्मार्ट निवेशक से भी की जाती है। कई बार निवेश स्कीम शुरू में तो आकर्षक लगती हैं पर आगे चल कर बोझ बन जाती हैं। निवेशक को जितना हो सके टेम्पटेशन से बचना चाहिए।

13. खुद को तीस मारखां समझना

मार्केट को टाइम करने का हुनर किसी के पास नहीं होता। ऐसा करने में सिर्फ नुकसान ही होता है। कब मार्केट चलनी है और कब गिरनी, इसका अंदाजा लगाना मुश्किल काम है। यहां तक कि दुनिया का सबसे तेज और समझदार निवेशक माने जाने वाले वॉरेन बफे भी इस हुनर की समझ न होना स्वीकारते हैं। निवेश तभी सेफ होता है, जब पैसा लम्बे समय के लिए बाजार में लगाया जाता है। करेक्शन कब खत्म होगी या तेजी कब तक चलेगी पता लगाना आसान नहीं होता।

14. बार-बार टोपी बदलना

हम पहले भी जिक्र कर चुके हैं कि निवेश लम्बे समय के लिए किया जाना चाहिए। एक तो इससे रिटर्न अच्छा मिलेगा और टैक्स की मार भी कम पड़ेगी। सारे साल ब्रोकर से मिलने वाली खरीदने और बेचने की टिप्स के पीछे भागने से सिर्फ ब्रोकर का पेट भरेगा और आपको ब्रोक्रेज के रूप में मोटी रकम हर बार ढीली करनी पड़ेगी।

15. आक्टोपस की नकल करना

आक्टोपस के ढेर सारे हाथ होते हैं। उन्हें वह अपने हिसाब से चला सकता है। निवेशक खुद को आक्टोपस न समझें। अपना पोर्टफोलियो जरूरत से ज्यादा न फैलाएं कि संभालना मुश्किल हो जाए। जिस तरह सारे अंडे एक टोकरी में नहीं रखे जाते, उसी तरह 10 जगह टांग फंसाने से भी नुकसान हो सकता है। 10-15 सेक्टर में ध्यान लगाने से बेहतर है चार-पांच सेक्टर में ध्यान लगाया जाए। इससे इनके बारे में जानकारी जुटाना भी आसान होगा और एवरेजिंग का फार्मूला भी सही तरीके से इस्तेमाल किया जा सकेगा।

16. पोर्टफोलियो नहीं, मार्केट पर नज़र

स्मार्ट निवेशक मार्केट के उतार-चढाव से परेशान नहीं होते। उन्हें तो केवल अपने पोर्टफोलियो में मौजूद शेयरों की चिंता रहती है। रिटेल निवेशक आमतौर पर प्रश्न पूछते हैं कि बाजार कहां तक चढ़ेगा-गिरेगा। आखिर क्यों? जर्वाकि पूछना चाहिए कि फलां कम्पनी का अगले 5-10 साल में क्या स्वरूप हो सकता है। ऐसे में आपके पोर्टफोलियो में मौजूद हीरे मार्केट के झटकों को आसानी से झेल जाएंगे।

17. घाटा बुक न करना

घाटा भी समय-समय पर बुक करते रहना जरूरी है। बाजार चढ़ता जाता है लेकिन प्राफिट बुकिंग नहीं करते कि थोड़ा और चलेगा, लेकिन जब बाजार गिरता है तो एक सीमा तक तो इंतजार करना ठीक है। इसके लिए घाटे की सीमा तय कर लें कहीं ऐसा न हो पूरा पैसा ही पानी हो जाए।

18. डेडलाइन पर ध्यान न देना

डेडलाइन को कभी भूलना नहीं चाहिए। शार्ट टर्म और लांग टर्म टैक्स का ध्यान रखना चाहिए। खरीदने और बेचने में जरा-सी लापरवाही टैक्स का कारण बन सकती है। इसी तरह बोनस और डिविडेंड की तारीख को भी नोट करके रखना चाहिए।

19. खाते सही तरीके से न रखना

आम निवेशक अपने रिकार्ड और खातों को संभाल कर नहीं रखते। कंट्रेक्ट नोट्स और पेमेंट के लेन-देन का रिकार्ड अच्छी तरह से संभालकर रखना चाहिए। इनकम टैक्स विभाग पिछले सालों के रिकार्ड भी आपसे मंगवा सकता है। बेहतर होगा जिस खाते से रकम निकाली जाए उसी में जमा कराएं जाए।

20. निवेश से दिल लगाना

कई बार निवेशक निवेश से दिल लगाने की भूल कर बैठता है। बार-बार एक ही जगह निवेश करता है। परफोर्मेंस खराब हो तो भी बेच कर दूसरी जगह निवेश नहीं करता है। यह तरीका आपके लिए घाटे वाला हो सकता है। समय-समय पर अपने पोर्टफोलियो की जांच करते रहें और बेहतर रिटर्न न देने वाले निवेश को अलविदा कर दें।

21. घबराहट में सारा माल बेचना

मंदी की मार आई तो घबराहट में सारा माल बेच देने की प्रवृत्ति आम तौर पर देखी जाती है। खरीददारी का बेहतरीन मौका तब होता है जब बाजार में गिरावट आती है। लेकिन आम निवेशक मंदी में बाजार से दूर भागता है और तेजी में आंख मूंद कर पैसा बाजार में निवेश करता है। इस तरह वह दो तरफ से मार खाता है- मंदी में माल बेचता है और ऊंचे दाम पर खरीदता है। होना इसका उल्टा चाहिए। गिरावट में अपने शेयर को एवरेज कर उसकी लागत कम करनी चाहिए।

22. ब्रोकर पर आंख मूंद कर भरोसा

ब्रोकर पर आंख मूंदकर भरोसा करना ठीक नहीं होता। पूल एकाउंट में शेयर छोड़ने पर वह उनकी ट्रेडिंग अपने फायदे के लिए कर सकता है। कई बार आपको ट्रेडिंग से होने वाले मुनाफे का लालच दिया जाता है चार-पांच छोटे लाभ देकर ब्रोकर कभी भी अपना बड़ा घाटा आपके खाते में ट्रांसफर कर सकता है।

23. पैसा डूबने की परवाह न करना

कई बार लोगों को यह कहते सुना है कि पैसा हाथ का मैल है। डूब गया मेरा कौन सा अपना था, यहीं कमाया था इसी बाजार में दे दिया। यह अप्रोच गलत है। आपने जो कमा लिया वह तो आपका हो चुका है। प्रॉफिट को रिइनवेस्ट करने से उसका महत्व आपके लिए कम नहीं होना चाहिए। बाजार में पैसा कमाना तो आसान है पर उस कमाए पैसे को बचाना और भी मुश्किल है।

24. ब्रोकरेज पर ध्यान न देना

ज्यादातर निवेशकों द्वारा कांट्रेक्ट नोट्स के लिफाफे बंद के बंद कोने में रख दिए जाते हैं। कई बार इनमें गलती भी होती है या कमीशन गलत भर दिया गया तो कमाई गई ब्रोकर की झोली में। आपसे जो चार्ज किया जा रहा है पता करें, क्या दूसरों से भी वही कमीशन लिया जा रहा है।

25. स्टॉप लॉस न लगाना

स्टॉप लॉस का इस्तेमाल करना चाहिए। यह सीमा आप तय करें कि आपका स्टॉप लॉस क्या हो। जैसे एक निर्धारित सीमा तक घाटा बुक करने में कोई गलत बात नहीं है उसी तरह प्रॉफिट में भी एक उचित सीमा पर पैसा निकाल लेना चाहिए। निवेश धैर्य और अनुशासन की कला है। मार्केट की स्थिति चाहे कैसी भी क्यों न हो, गलतियों से बचकर आप अपने पोर्टफोलियो की लांग टर्म परफोर्मेंस में सुधार ला सकते हैं।

सुब्रतो

आर्थिक निर्देश

सपने तो सब दिखाते हैं, लेकिन उन्हें सच करने की तरकीब कितने लोग बताते हैं? मंजिल की ओर इशारा करना तो आसान है, लेकिन उस तक पहुंचाने वाली डगर कौन दिखाएगा? कामयाबी के गुण तो सब गाएंगे, लेकिन उसकी तैयारी कौन कराएगा? हिन्दुस्तान ने शुरूआत की है। तैयारी के ये दो पन्ने उन पाठकों के नाम हमारा प्रेमपत्र हैं, जो जीवन में कुछ बनना चाहते हैं। जो जिंदगी की ट्रेन में बोगी का नहीं, इंजन का रोल निभाना चाहते हैं। लेकिन न तो हम बुजुर्गों की तरह नसीहत देंगे, न ही टीचर की तरह पाठ पढ़ाएंगे। हम दोस्त की तरह गुफ्तगू करेंगे। सोमवार से शनिवार तक, हर रोज़, क्रमशः पढ़िए पॉपुलर साइंस, अध्यात्म, हेल्थ-फिटनेस, जॉब-कॅरियर, करंट अफेयर्स और पर्सनल फाइनेंस पर विशेष न्यूज फीचर। हर शब्द आपको समर्थ बनाने वाला। हर लाइन आपकी तरक्की पर कुर्बान। पढ़ते रहिए हिन्दुस्तान।

सोने की खरीदारी में ही समझदारी

अक्षय तृतीया (7 मई) पर विशेष

ये हैं सोने के बाज़ार समीकरण

सर्वे गुणाः कांचनमाश्रयन्ति। संस्कृत की इस सूक्ति का एक व्यंग्यात्मक अर्थ है। इसके अनुसार सारे गुण सोने में ही वास करते हैं यानी दुनिया में जिसके पास सोना है उसमें सारे गुणों का वास मान लिया जाता है। लेकिन बाजार को देखें तो यह सूक्ति शब्दशः सच जान पड़ती है। कीमत, ग्लैमर, सौंदर्य, पवित्रता, वित्तीय सुरक्षा और भविष्य का बीमा—सभी कुछ तो है इस पीली धातु में। अक्षय तृतीया के अवसर पर सोने के रोचक पहलुओं पर **टीम सेंटर स्प्रेड** की विशेष सामग्रीः

बेशक हर चमकने वाली चीज सोना नहीं होती, लेकिन यह सोना ही है जिसकी चमक कभी फीकी नहीं पड़ती। हाल ही में तो इसकी चमक और भी बढ़ी है। पिछली दिवाली और होली के बीच ही सोने के भाव तीस फीसदी तक बढ़ गये। 7 जुलाई 07 से 17 मार्च 08 के बीच साढ़े नौ महीने में सोने की कीमतें 58 फीसदी चढ़ी हैं। बाजार के उतार-चढ़ाव को एडजस्ट भी कर लिया जाये तो महज तीन साल में सोने ने निवेशकों का पैसा दोगुना कर दिया है। यानी हर साल 30 फीसदी से भी ज्यादा रिटर्न। इस तेजी को देख लोग अब सोने को महज संकट का साथी नहीं, कमाई का कारगर विकल्प मानने लगे हैं। कुछ अर्सा पहले जो वित्तीय सलाहकार सोने में निवेश के नाम पर नाक-भौं सिकोड़ते थे अब वे न सिर्फ सोने में निवेश की सलाह दे रहे हैं बल्कि अपने पोर्टफोलियो में भी सोने के लिए गुंजाइश निकाल रहे हैं।

डिमांड ज्यादा सप्लाई कम

सवाल उठता है कि इतनी तेजी आ क्यों रही है और क्या यह आगे भी जारी रहेगी? क्या इस समय निवेश किया जा सकता है? इसका कोई सीधा जवाब नहीं दिया जा सकता। हां, डिमांड-सप्लाई के अंतर से कुछ संकेत जरूर हासिल किये जा सकते हैं। यह सभी जानते हैं कि डिमांड ज्यादा है और सप्लाई कम। पिछले साल विश्व में लगभग 2450 टन उत्पादन हुआ, जबकि डिमांड 3500 टन की थी। तीन हजार टन ज्वेलरी के लिए और 500 टन खुदरा निवेशकों और ईटीएफ के लिए। इस बढ़ती मांग की वजह बना विदेशी मार्केट में पिटा डालर। कमजोर डालर ने खुदरा और संस्थागत निवेशकों को सोचने पर मजबूर किया कि उन्हें डालर आधारित निवेशों से निकलना चाहिए। ऐसे में उन्हें सबसे सुरक्षित विकल्प सोना ही दिखाई दिया। यही वजह है कि ज्वेलरी, म्युचुअल फंड और गोल्ड ईटीएफ की तरफ से सोने की मांग बढ़ी।

बढ़ नहीं रहा उत्पादन

पिछले साल चीन, इंडोनेशिया और फिलीपींस सरीखे देशों में सोने का उत्पादन बढ़ा है। लेकिन इसके बावजूद वर्ष 2007 में सोने के कुल उत्पादन में गिरावट ही आई है। अफ्रीका में सोने की सर्वाधिक खदानें है लेकिन वहां सोने का उत्पादन घट रहा है। उत्तरी अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया में भी उत्पादन में गिरावट आई है। यह सिलसिला दो-तीन साल से बना हुआ है। 1990 के दशक में जहां खदानों की खोज का सालाना औसत चार या उससे ज्यादा का बना हुआ था, वह घटकर एक-दो रह गया है। गोल्ड फील्ड माइन सर्विसेस लिमिटेड के गोल्ड सर्वे 2008 की मानें तो इस साल भी सोने के उत्पादन में ठहराव बना रहेगा।

हॉलमार्किंग क्या है

सोने की शुद्धता की जांच करने के लिए ब्यूरो ऑफ इंडियन स्टैंडर्ड्स के हॉलमार्क को देखना चाहिए। कई देशों में हॉलमार्किंग की व्यवस्था लागू है। हॉलमार्क भारतीय मानक विशिष्टियों के अनुरूप सोने के सामान की शुद्धता का प्रमाणीकरण होता है। एक आधिकारिक हॉलमार्किंग सेंटर में सोने के बने सामान की जांच की जाती है और इस बात का प्रमाणपत्र जारी किया जाता है कि इन्हें बनाने में इस्तेमाल सोना शुद्धता के मामले में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मानकों पर खरा उतरा है।

भारत में किसका काम?

भारत में ब्यूरो ऑफ इंडियन स्टैंडर्ड्स सोने के मानकीकरण, प्रमाणीकरण और गुणवत्ता की जांच का काम करता है। बीआईएस हॉलमार्किंग स्कीम अंतरराष्ट्रीय हॉलमार्किंग मानदंड (विएना कन्वेंशन 1972) से सम्बद्ध है।

कैसे करते हैं मार्किंग?

बीआईएस द्वारा दी गई कोड संख्या और ज्वैलर का मार्क, सामान तैयार करने के वर्ष का कोड (जैसे कोड के लिए वर्ष 2000 के अंग्रेजी का अक्षर 'ए' तो 2001 के लिए 'बी' का इस्तेमाल किया जाएगा) और हॉलमार्किंग सेंटर का मार्क सामान के पीछे लगाया जाता है। यह मार्किंग पंच या लेजर मार्किंग मशीन से की जाती है।

लॉंग टर्म में बढ़ेंगी कीमतें

जानकारों का आकलन है कि शॉर्ट टर्म में भले ही सोने की कीमतों में उतार-चढ़ाव आये लेकिन लॉंग टर्म में सोने की कीमतों में तेजी बने रहने के आसार हैं। मांग और आपूर्ति तो इसकी वजह रहेगी ही, दूसरे सोने के खनन में बढ़ती लागत भी एक कारण बनेगा। अस्सी और नब्बे के दशक में दुनियाभर के सेंट्रल बैंकों द्वारा अपने भंडार से जब-तब सोने की बिक्री करने से मांग की पूर्ति होती रहती थी, लेकिन पिछले कुछ अर्से से सेंट्रल बैंक सीमित बिक्री ही करते हैं। कच्चे तेल की कीमतों में लगातार इजाफा, इक्विटी मार्केट के अनिश्चित व्यवहार और सबप्राइम संकट भी सोने की बढ़ती चमक की वजह हैं।

भारत में है सबसे ज्यादा खपत

सोने की सबसे ज्यादा मांग भारत, चीन, अमेरिका, तुर्की और इटली से आती है। विश्व के कुल उत्पादन का 50 फीसदी इन देशों में खप जाता है। इनमें भी भारत सबसे आगे है। भारत में सोने के प्रति दीवानगी है। विश्व का 23 फीसदी सोना भारत में खप जाता है। भारत में सोना महज चमकने वाली कीमती धातु से बढ़कर है। तीज-त्योहारों, धार्मिक अनुष्ठानों, शादी-ब्याह व खुशी के खास मौके पर लोग सोना खरीदना और उसे उपहार या दान में देने को पवित्र माना जाता है। पिछले ही साल भारत में 773 टन सोना खप गया। वर्ष 2004 की तुलना में यह दोगुना है।

कीमतें स्थिर होने का इंतजार

हालांकि पिछले कुछ माह से कीमतों में तेजी की वजह से सोने की डिमांड पर ब्रेक लगा हुआ है लेकिन जानकारों का मानना है कि ऐसा ज्यादा दिन नहीं चल सकता। दरअसल लोग कीमतें स्थिर होने का इंतजार कर रहे हैं, जैसे ही कीमतें स्थिर होंगी लोग खरीददारी के लिए निकल आयेंगे। इसकी झलक दिखने भी लगी है। मार्च में शिखर छूने के बाद सोना जैसे ही डेढ़-दो हजार रुपये नीचे आया खरीद निकलने लगी। भारत में मध्यवर्ग की परचेजिंग पावर बढ़ रही है। लगभग हर परिवार अपनी बचत का एक छोटा सा हिस्सा सोने में जरूर निवेश करता है।

आर्थिक निर्देश

और ये हैं उसमें निवेश के सूत्र

सोने में निवेश क्यों

पिछले कुछ महीनों में इक्विटी मार्केट ने जबर्दस्त उतार-चढ़ाव देखे। उतार-चढ़ाव का मामला सिर्फ घरेलू बाजार तक ही सीमित नहीं रहा विश्व बाजारों में भी अप्स एंड डाउन के बड़े-बड़े मंजर देखने को मिले। आर्थिक तकलीफों की वजह से अमेरिका की नाक में दम रहा क्योंकि निवेशक इससे पहले इतने डरे-सहमे नहीं थे। खासतौर से इक्विटी में निवेश को लेकर। ऐसे में जैसे ही निवेशकों ने इक्विटीज़ से किनारा करना शुरू किया पारंपरिक रूप से कीमती माने जाने वाले सोने ने एक बार फिर निवेशकों को अपनी चमक में ले लिया।

जाहिर है जब इक्विटी मार्केट में बड़े उतार-चढ़ाव का ग्राफ लगातार गतिमान रहेगा तो लोग सोने में निवेश करेंगे। ताकि उन्हें अतिरिक्त रिटर्न मिल सके। ऐसे में सबसे बड़ा सवाल यही है कि क्या उत्साही निवेशक उचित कारणों से सोने में निवेश कर रहे हैं? कम से कम सोने की बढ़ती कीमत ने तो निवेशकों को ऐसा विकल्प दिया है जिससे वे आसानी से पैसा बना सकते हैं। वैसे भी वर्तमान में सोना निवेश का एक सबसे अच्छा विकल्प बन चुका है। ऐसा विकल्प जिसमें फायदे की सबसे ज्यादा गारंटी है। इसका दूसरा पहलू यह भी है कि अब निवेशक सोने में जरूरत से ज्यादा निवेश कर चुके हैं जैसे कि पहले उन्होंने इक्विटीज़ में किए थे।

महंगाई से बचाव

महंगाई से मुकाबले के एक कारगर विकल्प के रूप में सोने की खरीद से पहले यह जान लेते हैं कि महंगाई का अर्थ होता क्या है? आमतौर पर महंगाई यानी इनफ्लेशन की व्याख्या हर जिंस की कीमत में बढ़ोतरी के रूप में की जाती है। इनफ्लेशन का एक नहीं अनेक चीजों पर एकसाथ असर पड़ता है। जैसे, पैसे की कीमत कम हो जाती है क्योंकि आपको उसी उत्पाद या सेवा के लिए अधिक पैसे देने पड़ते हैं। मिसाल के तौर पर अगर आप 40 रुपए प्रति लीटर पेट्रोल खरीद रहे होते हैं तो उसी एक लीटर के लिए 50 रुपए ढीले करने पड़ते हैं। इसलिए बेहतर तो यही रहेगा कि रुपए की कीमत में इस गिरावट से निवेशक खुद ही अपनी रक्षा करें।

अपनी संपत्ति या पैसे की रक्षा करने का एक तरीका तो यह हो सकता है कि उसका किसी विकल्प में निवेश कर दिया जाए जिसकी कीमत महंगाई में भी बरकरार रहती है। सोने को इसी वर्ग में रखा जा सकता है। गोल्ड एसेट क्लास में आता है। इतिहास बताता है कि सोने ने स्वयं को इनफ्लेशन के खिलाफ एक बेहतरीन हेज साबित किया है।

पोर्टफोलियो में आती है स्थिरता

सोना आपके पोर्टफोलियो में स्थिरता ला सकता है। इसका पता शुरुआत से ही चल जाता है। जैसा कि हमने देखा है कि अन्य सम्पत्तियों से जुदा सोना अलग तरह का बर्ताव करता है। जब इक्विटी में उतार-चढ़ाव होता है तो सोना आपके पोर्टफोलियो में एंकर यानी आधार का काम कर सकता है। जब स्टॉक मार्केट में उतार-चढ़ाव की हालत होती है तो अधिकांश निवेशकों को इसकी मार झेलनी पड़ती है। वजह यह है कि वे इक्विटीज़ में कुछ ज्यादा ही निवेश कर चुके होते हैं।

स्टॉक मार्केट रैली के समय फील गुड का शिकार होने के आसार ज्यादा होते हैं। होता यह है कि बाजार में मौजूद पैसा तो इक्विटी में जाता ही है बल्कि फ्रेश मनी भी इक्विटी में डायवर्ट हो जाती है। और जैसे ही बाजार औंधे मुंह गिरता है निवेशक भौंचक्के रहे जाते हैं क्योंकि उनके पास एंकर नहीं होता। लेकिन सोने जैसा एसेट यह भूमिका बखूबी अदा कर सकता है। पर शर्त यही है कि निवेशकों ने मार्केट क्रैश होने से पहले सोने में निवेश किया हो।

एसेट एलोकेशन

इसका अर्थ होता है अपने पैसे का अलग-अलग एसेट्स में बंटवारा (निवेश के तौर पर)। जैसे रियल एस्टेट, इक्विटी, ऋण बाजार, कैश एंड गोल्ड। संपत्तियों में समझदारी से किया गया आवंटन आपके पूरे के पूरे पोर्टफोलियो के खतरों को कम करता है और लॉन्ग टर्म परफॉर्मेंस को बेहतर बनाता है। किसी एक एसेट का घटिया प्रदर्शन पूरे पोर्टफोलियो पर ग्रहण नहीं लगाता। इसीलिए एसेट्स का बंटवारा बड़े सोच-विचार कर करें। यही नहीं एक निश्चित अंतराल पर एसेट्स में बंटवारे का संतुलन भी कायम करके रखें।

सोने में निवेश से पहले की कुछ बातें

समझदारी यह कहती है कि अपने एसेट्स का कुछ हिस्सा सोने में निवेश करना चाहिए। सोने में निवेश करने के कई फायदे हैं लेकिन फिर भी कुछ पहलुओं पर ध्यान देना जरूरी है।

- डिबेंचर्स या इसके जैसे दूसरे एसेट्स से अलग सोना लगातार आय नहीं देता।
- सोना में निवेश का कोई टैक्स लाभ नहीं मिलता। बल्कि बिक्री पर टैक्स देना पड़ता है।
- सोने की शुद्धता हमेशा से चिंता का कारण रही है। आपसे जो वायदा किया गया है माल वही मिलेगा इसकी संभावनाएं कम ही होती हैं। कम गुणवत्ता वाला सोना बेचते वक्त आपको कम दाम पर बात तय करनी होती है। लिहाजा इस समस्या से बचने के लिए खरीदारी के समय हमेशा सोने की शुद्धता को प्रमाणित करने वाले दस्तावेज की मांग करें।
- सोने को सहेजकर रखने में अतिरिक्त लागत आती है। अगर आपके पास सोना है तो बैंक लॉकर में निवेश करना पड़ेगा यानी लॉकर खोलने के लिए एफडी करवाना और लॉकर का सालाना किराया इत्यादि। अगर आप स्टॉक एक्सचेंज से सोना खरीदते हैं तो डी-मैट अकाउंट खुलवाना पड़ेगा।

बड़ा सवाल...

एक अहम सवाल यह है कि आपके पास कितना सोना होना चाहिए? यह निर्भर करता है कि आप कितना खतरा मोल ले सकते हैं और लॉन्ग टर्म निवेश के उद्देश्य क्या हैं। इसलिए तमाम बातों पर गौर करने के बाद यही उचित जान पड़ता है कि अधिकांश निवेशकों को 5 प्रतिशत से ज्यादा पैसा इसपर नहीं लगाना चाहिए। हालांकि आपको यह लग सकता है कि इस समय जबकि सोना ऊंचाई पर है इतने कम प्रतिशत निवेश की सलाह आखिर क्यों दी जा रही है लेकिन लंबे समय को ध्यान में रखते हुए सोने में जरूरत से ज्यादा निवेश आपके पोर्टफोलियो को नीचे गिरा सकता है।

बढ़ते निवेश के विकल्प

अब सोने में निवेश के कई विकल्प बाजार में मौजूद हैं।

आभूषणों में निवेश

सोने में निवेश का यह परंपरागत तरीका है। शादी-ब्याह, पर्व-त्योहार व खुशी के खास मौके पर गहने-जेवर खरीदना परंपरा है। सिर्फ महिलाएं ही नहीं पुरुष भी सोने के आभूषण पहनना पसंद करते हैं। यही वजह है कि विश्व के कुल परिष्कृत सोने का 10 फीसदी यानी 14 हजार टन से ज्यादा भारतीय घरों में है।

सिक्कों और छड़ों में निवेश

सिक्के और छड़-सोने में निवेश का बेहतरीन जरिया हैं। इन्हें बैंक से खरीदा जा सकता है। बाजार की तुलना में बैंक से सिक्के और छड़ कुछ महंगे मिलते हैं लेकिन उनकी शुद्धता की गारंटी रहती है। बस इन्हें बेचना बाजार में पड़ेगा क्योंकि बैंक सोना वापस नहीं खरीदते।

गोल्ड ईटीएफ और फ्यूचर

सोने में निवेश का यह अपेक्षाकृत नया तरीका है। ईटीएफ में निवेश के लिए डीमैट एकाउंट का होना जरूरी है। किसी ब्रोकर के यहां ट्रेडिंग एकाउंट खुलवाकर महज एक यूनिट भी खरीदी जा सकती है। गोल्ड फ्यूचर के लिए कमोडिटी डीमैट एकाउंट खुलवाने के बाद किसी भी ब्रोकर के जरिए गोल्ड फ्युचर में निवेश किया जा सकता है।

आर्थिक निर्देश

महंगाई

आर्थिक निर्देश

महंगाई से बचने के सूत्र

महंगाई के मद्देनज़र जब भी बचत की बात उठती है तो उसका सीधा अर्थ पेट काटकर बचत करने से लगा लिया जाता है। लेकिन बचत का मतलब अपनी जरूरतों और अनिवार्यताओं में कटौती से कतई नहीं होता क्योंकि वह संभव नहीं। हां, इतना जरूर है कि अपनी कुछ आदतों में बदलाव करके और प्राथमिकताओं को वक्त के हिसाब से बदलते रहने से महंगाई के असर को तो कम किया ही जा सकता है कुछ बचत भी की जा सकती है। ऐसे समय में समझदारी से किया गया निवेश भी महंगाई के प्रहार को हल्का करेगा। भीषण महंगाई के बीच बचत और निवेश के असरदार रास्तों पर रोशनी डाल रहे हैं हरिश्चंद्र यादव, दुष्यंत शर्मा और राकेश तनेजा

पैसा बचाने के सूत्र हर कोई तलाशता है। कुछ लोग बचत के फार्मूलों को जानने के लिए अपने परिवार और जान-पहचान के चंद लोगों तक सीमित रहते हैं। इसके अलावा अखबारों, पत्रिकाओं और टीवी चैनल्स पर भी बचत के टिप्स दिए जाते हैं। यहां कुछ ऐसे ही टिप्स पर नजर डालते हैं जो आपकी बचत या कि आर्थिक प्रबंधन में मददगार साबित होंगे।

बजट पर रहें कायम

जब आप अपने दैनिक खर्चों की सूची बनाएंगे तो पता चलेगा कि आप कितनी कमाई करते हैं, खर्च उसके पार जा रहे हैं। तभी आपको एहसास हो जाएगा कि अब खर्चों में कटौती का वक्त आ गया है। जब आपके खर्चों और कमाई में साम्य हो जाएगा तो खरीदारी के वक्त बाजार के आकर्षक प्रलोभनों से खुद को बचाएं। जैसे-जैसे आप अपने अनावश्यक दैनिक खर्चों में कटौती करेंगे और बाजार के प्रलोभनों से भी खुद को बचाए रखेंगे तो बचत की राहें आसान हो जाएंगी।

क्रेडिट कार्ड और फिजूलखर्ची

ज्यादातर लोग प्लास्टिक मनी के घेरे से खुद को बचा नहीं पाते। हालांकि क्रेडिट कार्ड तात्कालिक रूप से सुविधा जरूर दे देता है, लेकिन अंततः जेब पर भारी ही पड़ता है। इसलिए अगर आपको बचत करनी है तो जहां तक संभव हो भुगतान कैश करें। अगर आप क्रेडिट कार्ड रखते हैं तो उससे जुड़े खर्चों पर भी नजर रखनी होगी। जैसे कि इससे जुड़ी फीस इत्यादि। अगर आपका गुजारा क्रेडिट कार्ड के बगैर संभव नहीं है तो वो कार्ड रखिए जिसकी सालाना फीस न हो।

खर्च पर नियंत्रण

क्या रोज दोपहर का खाना आपके पर्स पर भारी पड़ रहा है? क्या ईंधन का मासिक खर्च बोझ बनता जा रहा है? खैर खाना या पेट्रोल-डीजल ही नहीं मोबाइल का बिल, गप-पत्रिकाओं का बिल और ऐसे ही दूसरे खर्चे क्या आपको सताने लगे हैं। ऐसे में दोपहर का भोजन घर से ले जाना शुरू कर दीजिए। ईंधन बचत के भी उपाय हैं। जैसे अगर आप कार से आते-जाते हैं तो पूलिंग सिस्टम बना लें। पब्लिक ट्रांसपोर्ट का विकल्प चुन लें। फोन बिल ज्यादा आ रहा है तो सबसे पहले अपना प्लान चेक करें कि वह आपकी जरूरत के मुताबिक है कि नहीं।

बचत के लिए खुद पर डालें दबाव

किसी ऐसे सिस्टैमैटिक इनवेस्टमैंट प्लान को चुन लीजिए या फिर कोई ऐसा मासिक निवेश का विकल्प चुनें जिसकी किस्त आपके बैंक अकाउंट से महीने की पहली तारीख को सीधी कट जाए। ऐसा करने पर आप बचत के लिए बाध्य हो जाएंगे और मजबूरी में ही सही आपको अपने खर्चे कम करने पड़ेंगे। लेकिन यह फैसला आपको ही करना होगा कि किस खर्च को आप गैर-जरूरी मानते हैं।

जरा सी समझदारी

अगर थोड़ी सी सावधानी बरती जाए तो बिजली बिल में 20 से 25 फीसदी की कमी लाई जा सकती है। खासतौर से महंगाई के दौर में किसी एक घर में 20-25 फीसदी की कमी बड़ा संबल बन सकती है। घर में इस्तेमाल होने वाले कई बिजली उपकरणों के रख-रखाव और सटीक इस्तेमाल से अच्छी-खासी बचत हो सकती है।

कंप्यूटर : स्लीपमोड में कंप्यूटर में 70 फीसदी कम बिजली खर्च होती है। स्लीपमोड यानी वह स्थिति जब आप कंप्यूटर पर काम न कर रहे हों तो वह स्लीपमोड में चला जाये। मसलन आप कंप्यूटर पर काम कर रहे हैं, अचानक फोन आ गया या दरवाजे की घंटी बजी और कोई आ गया और आप बातों में लग गए, इस बीच काफी ऊर्जा बेकार चली जाएगी, लेकिन अगर कंप्यूटर में स्लीपमोड एक्टिवेट है तो बेकार जाने वाली बिजली में काफी कमी लाई जा सकती है। डेस्कटॉप के मुकाबले लैपटॉप में 90 फीसदी कम बिजली खर्च होती है।

रेफ्रीजरेटर : बहुत से घरों के बिजली बिल में 15-20 फीसदी हिस्सा रेफ्रीजरेटर का होता है। अगर रेफ्रीजरेटर की कंडेंसर कॉइल्स पर पड़ी धूल को झाड़ते रहें तो इसकी एफीशियंसी बढ़ाई जा सकती है। इसके अतिरिक्त रेफ्रीजरेटर का दरवाजा बार-बार खोलने से बचना, तरल पदार्थों को ढके रखना व फ्रीजर का कायदे से इस्तेमाल कर बिजली की खपत में कमी लाई जा सकती है।

वाशिंग मशीन : कई घरों में लगभग बीस फीसदी बिजली वाशिंग मशीन की वजह से खर्च हो जाती है। दो-चार कपड़ों के लिए वाशिंग मशीन का इस्तेमाल टालें। कोशिश करें कि दो-चार दिन के कपड़े एक साथ धोएं। इससे बिजली भी कम खर्च होगी और पानी भी।

एयर कंडीशनर : हवा का प्रवाह एयरकंडीशनर के पीछे ब्लॉक न होने दें। पहली बार एसी ऑन करें तो एसी थर्मोस्टेट को कोल्डर सैटिंग पर एडजस्ट न करें, इससे कमरा तो तेजी से ठंडा होगा नहीं अलबत्ता बिजली जरूर ज्यादा खर्च होगी। नियमित अंतराल पर एसी चैक कराया जाये तो काफी बिजली बचाई जा सकती है।

ओवन : सामान्य ओवन की तुलना में माक्रोवेव्ज ओवन में 50 फीसदी कम बिजली खर्च होती है। खाना पकाने की शुरुआत उच्चतम तापमान से करें। तरल पदार्थ उबलने लगें तो तापमान घटा दें। ओवन डोर बार-बार खोलने से बचें क्योंकि एक बार डोर खोलने का मतलब है तापमान में 5 से 7 डिग्री की गिरावट।

रिचार्जेबल बैटरी : घर के कई उपकरण रिमोट कंट्रोल से संचालित होते हैं। आमतौर पर उनमें साधारण बैटरी का इस्तेमाल किया जाता है, लेकिन यदि रिचार्जेबल बैटरी का इस्तेमाल किया जाए तो यह कई गुना किफायती पड़ेगा।

गीजर : सर्वाधिक बिजली खाने वाले उपकरणों में गीजर भी है। गीजर किचन और बाथरूम के जितना नजदीक हो उतना अच्छा। गीजर और टोंटी के बीच जितना लंबा पाइप होगा, गर्म पानी के लिए उतनी ही ज्यादा बिजली खर्च करनी होगी। जितना पानी चाहिए उतना ही गर्म करें। संभव हो तो सोलर गीजर अपनाएं।

टीवी, म्यूजिक सिस्टम : जब इस्तेमाल नहीं कर रहे हों तो पावर स्विच को बंद रखें। महज इतना करने से हर साल काफी बिजली बचाई जा सकती है। टीवी देखने का मन है तो पहले तय कर लें कि क्या देखना चाहते हैं, वरना होता यही है कि रिमोट से चैनल बदलते-बदलते कब एक घंटा निकल जाता है पता ही नहीं चलता। ऐसे में मनोरंजन तो हो ही नहीं पाता, वक्त और बिजली बर्बाद होती है वो अलग।

स्टार रेटिंग उपकरण : बिजली बचाने का एक बेहतरीन जरिया है स्टार रेटिंग उपकरण। उपकरण पर जितने ज्यादा स्टार बिजली की खपत उतनी कम। बिना स्टार वाले उपकरण में बिजली की खपत आगर 1100 यूनिट होती है तो 5 स्टार वाले उपकरण में यह खपत महज 400 यूनिट की है। यानी हर साल 2800 रु. की बचत।

महंगाई से ऐसे करें कदमताल

- कामकाजी वर्षों के दौरान अपनी 10 प्रतिशत आफ्टर-टैक्स इनकम बचाएं। यह सिलसिला जितनी जल्द शुरू हो जाए उतना अच्छा।
- बजट में समाने वाला बेहतरीन घर खरीदें। हो सकता है लंबे समय में उसकी कीमत महंगाई से कदमताल करते हुए आगे निकल आए।
- तरह-तरह के स्टॉक्स में इनवेस्ट करें, लेकिन लक्ष्य यह हो कि आपको सालाना 12 फीसद रिटर्न मिल जाए।
- रिटायर होने से पहले लोन चुकता कर लें।
- महंगाई के घटने के साथ-साथ ही अपने इनवेस्टमैंट पोर्टफोलियो में बदलाव लाते रहें। बढ़ती महंगाई में रियल एस्टेट और कीमती धातुएं फायदा पहुंचा सकती हैं हालांकि इन्हें जोखिम भरा भी माना जाता है। जब महंगाई गिर रही हो, तो स्टॉक का प्रदर्शन अक्सर बेहतर रहता है।
- जहां रिटर्न का रेट कम रहता हो वहां कतई निवेश न करें।
- अपनी बचत का एक हिस्सा म्युचुअल फंड में डालें क्योंकि ये आमतौर पर महंगाई दर से ज्यादा रिटर्न देने वाले साबित होते रहे हैं।
- बॉन्ड्स में बड़े निवेश से बचें। ये अक्सर औसत ब्याज से भी घटिया प्रदर्शन करते रहे हैं।

थोड़ी देर से दिखेगा असर

देशभर में पेट्रोलियम पदार्थों के दाम बढ़ने से तकरीबन सभी चीजों और सेवाओं की कीमतों में इजाफा होना शुरू हो गया है। कीमतों के बढ़ने से महंगाई दर के और बढ़ने के आसार साफ नजर आ रहे हैं। इस बढ़ोतरी का सीधा असर हमारे लिए दूरदराज से आने वाली सामग्री की ढुलाई पर पड़ेगा। इससे सामान के दाम बढ़ जाएंगे। हालांकि इस महंगाई का असर अभी फौरी तौर पर नहीं दिखेगा क्योंकि कंपनियां अब दाम बढ़ाना शुरू करेंगी और हम तक माल पहुंचने में थोड़ा वक्त लगेगा।

तेल की तपिश किसके खाते में

तेल में लगी आग ने पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था को हिला कर रख दिया है। यह तो तय है कि देर-सवेर इसकी तपिश उपभोक्ता को ही झेलनी पड़ेगी। तेल की कीमतें इसी तरह चढ़ती रहीं तो जरूरत के हर सामान के दाम बढ़ते जाएंगे और उपभोक्ता की कमर उसके बोझ से टूटती जाएगी। भोजन और यातायात पर बढ़ते इस बोझ से उपभोक्ता की क्रय-शक्ति कमजोर होती जा रही है। भारत में सबसिडी के कारण टैक्सपेयर को तेल की तपिश झेलनी पड़ती है। तेल के दामों में खड़ी चढ़ाई से निपटने के लिए नीतिगत फैसले न लिए गए तो निवेशकों की खामियाजा उठाना पड़ेगा।

आंकड़े हैं टेढ़ीखीर

महंगाई के आंकड़े समझना बड़ी टेढ़ी खीर है। कई सूचकांकों के आधार पर इसका निर्धारण किया जाता है। कुछ चीजें इसमें शामिल की जाती हैं तो कुछ चीजों के आंकड़े इसमें शामिल नहीं किए जाते और यह आंकड़े ताजा हफ्ते के न होकर पिछले हफ्तों के होते हैं।

थोक मूल्य सूचकांक!

थोक मूल्य सूचकांक भारत में कई चीजों के थोक भाव को मापने का जरिया है। इसके आंकड़े हर सप्ताह जारी किए जाते हैं। काफी लंबे समय से इस सूचकांक में परिवर्तन कर नई मदों को शामिल करने का दबाव डाला जा रहा था। यहां तक कि इस सूचकांक को लोग बाबा आदम के जमाने का सूचकांक भी कह देते हैं। वक्त के साथ लोगों की जीवनशैली में भी बदलाव आया है। एक्सपर्ट मानते हैं कि इस बदलाव को सूचकांक में भी दिखाई देना चाहिए।

आर्थिक निर्देश

आर्थिक निर्देश

कच्चे तेल की कीमतों में लगी आग

फिलहाल चिंता की बात नहीं : पेट्रोलियम मंत्रालय

ओपेक देशों का 1 नवंबर से उत्पादन पांच लाख बैरल बढ़ाने का फैसला

शशि झा

नई दिल्ली। अंतर्राष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतें भड़की हुई हैं। अमेरिका में तेल भंडार में कमी और मेक्सिको की खाड़ी में उठे तूफान से आपूर्ति में बाधा आने की आशंका ने इसकी कीमतों में आग लगा दी है और इसके दाम यूएस क्रूड 80.18 डालर प्रति बैरल के रिकार्ड पर पहुंच गए। लंदन ब्रेंट का दाम भी 77.68 डालर प्रति बैरल तक चला गया। कच्चे तेल की कीमतों में आई इस कदर तेजी ने भारतीय अर्थशास्त्रियों की पेशानी पर भी बल डाल दिए हैं।

हालांकि कच्चे तेल की कीमतों में कमी लाने के एक उपाय के रूप में तेल निर्यातक देशों के संगठन (ओपेक) ने इस वर्ष 1 नवम्बर से उत्पादन पांच लाख बैरल बढ़ाने का फैसला किया लेकिन जानकारों का मानना है कि कीमतों में कमी के लिए यह पर्याप्त नहीं है। पेट्रोलियम मंत्रालय के सूत्रों ने इसपर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए बताया कि कच्चे तेल की कीमतों में आई इस तेजी से फिलहाल चिंता की कोई बात नहीं है। उन्होंने कहा कि एक दो दिनों की तेजी से हालात में अधिक का फर्क नहीं आने वाला। उन्होंने बताया कि दामों में अगर लंबे समय तक तेजी बनी रहती है तब जाकर सरकार को इससे निपटने का कोई उपाय करना पड़ सकता है।

चूंकि सरकार को पेट्रो उत्पादों की कीमतों में बढ़ोत्तरी करते समय राजनीतिक समीकरणों का भी ध्यान रखना पड़ता है इसलिए, उसके लिए सीधे दाम बढ़ा देना बहुत सरल नहीं है। भारत के संदर्भ में कच्चे तेल की कीमतों में तेजी आने का सीधा अर्थ यह होता है कि सार्वजनिक क्षेत्र की तेल विपणन कंपनियों पर अंडररिकवरी (लागत मूल्य से कम पर बिक्री) का बोझ और अधिक बढ़ जाता है। बेशक सरकार काफी हद तक इस बोझ को खुद तथा सार्वजनिक क्षेत्र की अपस्ट्रीम (जैसे गेल, ओएनजीसी आदि) तथा डाउनस्ट्रीम (जैसे आईओसी, बीपीसीएल, एचपीसीएल) कंपनियों के जरिये इस बोझ को खुद ही उठाने की कोशिश करती है लेकिन बोझ अधिक बढ़ जाने पर उसे इसे आम आदमियों तथा उपभोक्ताओं के साथ बांटने को भी मजबूर होना पड़ता है। 2002 के बाद से कच्चे तेल की कीमतों में 165 प्रतिशत से अधिक की तेजी आ चुकी है और इसी के अनुरूप ईंधन की कीमतें भी बढ़ी हैं। किरोसीन एवं एलपीजी पर सबसिडी को चरणबद्ध तरीके से आने वाले वर्षों में और संभवत: 2007 तक समाप्त किया जाना था, लेकिन यहीं आकर पेट्रोलियम उद्योग की उदारीकरण थम सी गई है।

जानकारों के अनुसार, अंतर्राष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतों में उछाल के पीछे तेल की कमी कोई कारण नहीं है। कुछ हद तक कई देशों में तेल की निम्न रिफाइनिंग क्षमता भी इसकी कीमतों में आई तेजी के लिए जरूर जिम्मेदार है, बुनियादी रूप से इसके पीछे कोई गड़बड़ी नहीं है। उल्लेखनीय है कि गुरुवार को कच्चे तेल के दाम में कुछ कमी आई है लेकिन यह अभी भी रिकार्ड ऊंचाई के निकट बनी हुई है। इस समय यूएस क्रूड 79.77 डालर प्रति बैरल तथा लंदन ब्रेंट 77.55 डालर प्रति बैरल पर है।

आर्थिक निर्देश

आर्थिक निर्देश

पवन

आर्थिक निर्देश

आईटी, बैंकिंग, विमानन, बॉयोटेक, शिक्षा, मेडीकल और कंस्ट्रक्शन सेक्टरों में महसूस की जा रही है हुनरमंद कामगार की भयानक किल्लत

नौकरियां बेशुमार, लेकिन कहां हैं काबिल कामगार

बीपीओ और आईटी सेक्टर का बुरा है हाल

कुशल कामगारों की कमी का काफी असर इस क्षेत्र पर हो रहा है। फिक्की के एक सर्वे का कहना है कि फिलहाल इस क्षेत्र में 65 फीसदी लोगों की कमी है। अब तो आउटसोर्सिंग बाजार पर भारतीय बादशाहत पर खतरे के बादल मंडरा रहे हैं। इंफोसिस के सीईओ नंदन नीलेकनी ने कहा, 'हमें हर साल 70 हजार लोगों की जरूरत है, लेकिन इतने कुशल श्रमिक मौजूद नहीं हैं।' लोगों की कमी की असल वजह ऊंची सेलरी की डिमांड है। इससे कम लागत का फायदा भी खत्म हो रहा है। कंपनियां अब पूर्व यूरोप का रुख कर रही हैं। सबसे ज्यादा असर सॉफ्टवेयर इंजीनियरिंग पर पड़ा है।

डाक्टरों और नर्सों की कमी से बिगड़ी तबीयत

इस वक्त देश में सवा अरब की जनसंख्या पर मात्र छह लाख डाक्टर और एक लाख नर्सें हैं। हर साल देश के मेडिकल कालेजों में मात्र 22 हजार नए डाक्टर निकलते हैं, जबकि जरूरत है डेढ़ से दो लाख डाक्टरों की। इस रफ्तार से भारत में 2012 तक सात लाख डाक्टर ही उपलब्ध होंगे, जबकि देश को जरूरत होगी 12 लाख से ज्यादा डाक्टरों की। सबसे बुरा हाल तो नर्सों की कमी के कारण होगा। 2012 तक देश को कम से कम दस लाख नर्सें की कमी से जूझना पड़ेगा। इसकी सबसे बड़ी वजह नर्सों का विदेश प्रेम। आज विदेशों में उन्हें काफी अच्छी सेलरी मिल रही है।

कंस्ट्रक्शन सेक्टर का भी पस्त है हाल

यह देश में सबसे तेजी से विकास कर रहे क्षेत्रों में से एक है। लेकिन इसे इंजीनियरों और आर्किटेक्चरों की कमी का मुकाबला करना पड़ रहा है। देश में हर साल करीब पांच लाख नए इंजीनियरों की जरूरत होती है, लेकिन उपलब्ध हो पाते हैं कुल डेढ़ तीन लाख ही। आशंका है कि 2012 तक देश में साढ़े तीन लाख इंजीनियरों की कमी होगी। इस सेक्टर में अकुशल मजदूरों की भी भारी कमी है। एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि, 'जब से राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी कानून बना है, गांवों से लोगों का आना काफी कम हो गया है। इससे हमारी काफी योजनाएं लटक गई हैं।'

लगाना होगा शोध कार्यों में भी पैसा

भारत वैज्ञानिकों की भारी किल्लत का सामना कर रहा है। अब बॉयोटेक्नोलॉजी क्षेत्र को ही लें, यहां करीब 80 फीसदी कुशल लोगों की कमी है। इसका सबसे ज्यादा असर दवा उद्योग पर पड़ा है। एक दवा कंपनी के सीईओ सुरेंद्र खैर का कहना है कि हमारे पास दिमाग की कमी नहीं है, कमी है तो बस काम करने के लायक स्किल्स की। सरकार और शैक्षिक जगत को यहां मिलकर काम करने की जरूरत है। वैज्ञानिकों की कमी असर देश के रक्षा उद्योग पर भी पड़ रहा है। डीआरडीओ ने भी स्वीकारा है कि वैज्ञानिकों की कमी उसके लिए सबसे बड़ी मुसीबत है।

पायलटों व टेक्नीशियनों का भारी टोटा

देश के विमानन उद्योग के समाने सबसे बड़ी मुसीबत पायलटों की कमी है। हालत यह है कि सरकार को पायलटों की रिटायरमेंट की उम्र तक बढ़ानी पड़ी और ट्रेनिंग की अवधि को कम करना पड़ गया। फिक्की ने कहा कि देश में 2012 तक 5400 पायलटों की कमी से दो चार होना पड़ेगा। वहीं साल भर में देश के फ्लाइंग स्कूलों से पास आउट होने वाले पायलटों की संख्या अभी तक सैकड़ों में भी नहीं पहुंच पाई है। देश में एयर ट्रैफिक कंट्रोलरों की भी भारी किल्लत है। साथ ही साथ, इस सेक्टर को इंजीनियरों की किल्लत से भी दो चार होना पड़ रहा है।

प्रोफेशनल्स की कमी से बैंकिंग भी बेहाल

कुशल कामगारों की कमी से वित्त व बैंकिंग जगत भी बुरी तरह प्रभावित है। देश में काम कर रहे बैंकों और वित्तीय संस्थानों में रिस्क मैनेजरों की कमी का स्तर 90 फीसदी की खतरनाक स्तर तक पहुंच चुका है। फाइनेंसियल अनालिस्ट्स की कमी भी 80 फीसदी के स्तर पर है। आईसीआईसीआई बैंक के सीईओ के.वी. कामथ ने हाल ही में कहा था कि उनके बैंक को हर साल 10 हजार लोगों की जरूरत पड़ती है, जबकि इतने लोग उन्हें मिल नहीं पाते। हाल के सालों में विदेशी बैंकों और वित्तीय संस्थानों के भारत में आने के कारण यहां भी काबिल लोगों की कमी साफ महसूस की जा सकती है।

खौफनाक स्तर पर पहुंची शिक्षकों की किल्लत

भारत में शिक्षकों की कमी खौफनाक स्तर पर पहुंच चुकी है। इस कमी का सबसे ज्यादा असर उच्च शिक्षण संस्थानों में महसूस किया जा रहा है। एक अनुमान के मुताबिक देश के विश्वविद्यालयों में कम से कम 33 हजार शिक्षकों की कमी है। इससे आईआईटी और आईआईएम भी इससे अछूते नहीं हैं। इस वक्त देश भर के सातों आईआईटी में कम से कम 900 फैकल्टी मेंबर्स की कमी झेल है। आईआईएम-ए को भी शिक्षकों की कमी झेलनी पड़ रही है। इंजीनियरिंग शिक्षक मोटी सेलरी की लालच मे कंपनियों को ज्वाइन कर रहे हैं। विश्लेषकों के मुताबिक इससे देश के आर्थिक विकास पर बुरा असर पड़ेगा।

प्रस्तुति : समन्वय डेस्क

आर्थिक निर्देश

खजाना

लतीफे

जब एक आदमी मर कर नर्क गया तो उसे बताया गया कि हर देश का अपना नर्क है, हालांकि हर व्यक्ति को यह चुनने की छूट है कि वह किस देश के नर्क में जाएगा।

पहले उसे जर्मनी का नर्क दिखाया गया। वहाँ हर आदमी को पहले इलेक्ट्रिक चेयर पर बिठाकर बिजली के झटके दिए जाते थे। फिर कीलों से भरे एक बिस्तर पर लिटाया जाता था और फिर एक जल्लाद कोड़े मारता था। उस नर्क में काफी कम लोग थे। आगे तमाम देशों के नर्कों में भी ये ही सजाएं थीं और हर जगह कम लोग थे। अंत में भारत के नर्क में भी ये ही सजाएं थीं लेकिन वहां बड़ी भीड़ लगी थी। उसने यमदूत से पूछा- सजाएं तो हर जगह एक सी हैं फिर भारत के नर्क में ही भीड़ क्यों है?

यमदूत ने कहा- भारत के नर्क में फर्क यह है कि यहाँ अक्सर बिजली नहीं होती सो इलेक्ट्रिक चेयर काम नहीं करती, लोग कीलों वाले बिस्तर से कीलें चुरा ले गए हैं और जल्लाद जो है, वह सरकारी कर्मचारी है सो वह रोज आकर रजिस्टर में दस्तखत करता है लेकिन कोई काम नहीं करता।

आर्थिक निर्देश

बीपीओ और आईटी सेक्टर का बुरा है हाल

कुशल कामगारों की कमी का काफी असर इस क्षेत्र पर हो रहा है। फिक्की के एक सर्वे का कहना है कि फिलहाल इस क्षेत्र में 65 फीसदी लोगों की कमी है। अब तो आउटसोर्सिंग बाजार पर भारतीय बादशाहत पर खतरे के बादल मंडरा रहे हैं। इंफोसिस के सीईओ नंदन नीलेकनी ने कहा, 'हमें हर साल 70 हजार लोगों की जरूरत है, लेकिन इतने कुशल श्रमिक मौजूद नहीं हैं।' लोगों की कमी की असल वजह ऊंची सेलरी की डिमांड है। इससे कम लागत का फायदा भी खत्म हो रहा है। कंपनियां अब पूर्व यूरोप का रुख कर रही हैं। सबसे ज्यादा असर सॉफ्टवेयर इंजीनियरिंग पर पड़ा है।

डाक्टरों और नर्सों की कमी से बिगड़ी तबीयत

इस वक्त देश में सवा अरब की जनसंख्या पर मात्र छह लाख डाक्टर और एक लाख नर्सें हैं। हर साल देश के मेडिकल कालेजों में मात्र 22 हजार नए डाक्टर निकलते हैं, जबकि जरूरत है डेढ़ से दो लाख डाक्टरों की। इस रफ्तार से भारत में 2012 तक सात लाख डाक्टर ही उपलब्ध होंगे, जबकि देश को जरूरत होगी 12 लाख से ज्यादा डाक्टरों की। सबसे बुरा हाल तो नर्सों की कमी के कारण होगा। 2012 तक देश को कम से कम दस लाख नर्सें की कमी से जूझना पड़ेगा। इसकी सबसे बड़ी वजह नर्सों का विदेश प्रेम। आज विदेशों में उन्हें काफी अच्छी सेलरी मिल रही है।

आर्थिक निर्देश

कंस्ट्रक्शन सेक्टर का भी पस्त है हाल

यह देश में सबसे तेजी से विकास कर रहे क्षेत्रों में से एक है। लेकिन इसे इंजीनियरों और आर्किटेक्चरों की कमी का मुकाबला करना पड़ रहा है। देश में हर साल करीब पांच लाख नए इंजीनियरों की जरूरत होती है, लेकिन उपलब्ध हो पाते हैं कुल डेढ़ तीन लाख ही। आशंका है कि 2012 तक देश में साढ़े तीन लाख इंजीनियरों की कमी होगी। इस सेक्टर में अकुशल मजदूरों की भी भारी कमी है। एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि, 'जब से राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी कानून बना है, गांवों से लोगों का आना काफी कम हो गया है। इससे हमारी काफी योजनाएं लटक गई हैं।'

लगाना होगा शोध कार्यों में भी पैसा

भारत वैज्ञानिकों की भारी किल्लत का सामना कर रहा है। अब बॉयोटेक्नोलॉजी क्षेत्र को ही लें, यहां करीब 80 फीसदी कुशल लोगों की कमी है। इसका सबसे ज्यादा असर दवा उद्योग पर पड़ा है। एक दवा कंपनी के सीईओ सुरेंद्र खैर का कहना है कि हमारे पास दिमाग की कमी नहीं है, कमी है तो बस काम करने के लायक स्किल्स की। सरकार और शैक्षिक जगत को यहां मिलकर काम करने की जरूरत है। वैज्ञानिकों की कमी असर देश के रक्षा उद्योग पर भी पड़ रहा है। डीआरडीओ ने भी स्वीकारा है कि वैज्ञानिकों की कमी उसके लिए सबसे बड़ी मुसीबत है।

आर्थिक निर्देश

पायलटों व टेक्नीशियनों का भारी टोटा

देश के विमानन उद्योग के समाने सबसे बड़ी मुसीबत पायलटों की कमी है। हालत यह है कि सरकार को पायलटों की रिटायरमेंट की उम्र तक बढ़ानी पड़ी और ट्रेनिंग की अवधि को कम करना पड़ गया। फिक्की ने कहा कि देश में 2012 तक 5400 पायलटों की कमी से दो चार होना पड़ेगा। वहीं साल भर में देश के फ्लाइंग स्कूलों से पास आउट होने वाले पायलटों की संख्या अभी तक सैकड़ों में भी नहीं पहुंच पाई है। देश में एयर ट्रैफिक कंट्रोलरों की भी भारी किल्लत है। साथ ही साथ, इस सेक्टर को इंजीनियरों की किल्लत से भी दो चार होना पड़ रहा है।

प्रोफेशनल्स की कमी से बैंकिंग भी बेहाल

कुशल कामगारों की कमी से वित्त व बैंकिंग जगत भी बुरी तरह प्रभावित है। देश में काम कर रहे बैंकों और वित्तीय संस्थानों में रिस्क मैनेजरों की कमी का स्तर 90 फीसदी की खतरनाक स्तर तक पहुंच चुका है। फाइनेंसियल अनालिस्ट्स की कमी भी 80 फीसदी के स्तर पर है। आईसीआईसीआई बैंक के सीईओ के.वी. कामथ ने हाल ही में कहा था कि उनके बैंक को हर साल 10 हजार लोगों की जरूरत पड़ती है, जबकि इतने लोग उन्हें मिल नहीं पाते। हाल के सालों में विदेशी बैंकों और वित्तीय संस्थानों के भारत में आने के कारण यहां भी काबिल लोगों की कमी साफ महसूस की जा सकती है।

आर्थिक निर्देश

खौफनाक स्तर पर पहुंची शिक्षकों की किल्लत

भारत में शिक्षकों की कमी खौफनाक स्तर पर पहुंच चुकी है। इस कमी का सबसे ज्यादा असर उच्च शिक्षण संस्थानों में महसूस किया जा रहा है। एक अनुमान के मुताबिक देश के विश्वविद्यालयों में कम से कम 33 हजार शिक्षकों की कमी है। इससे आईआईटी और आईआईएम भी इससे अछूते नहीं हैं। इस वक्त देश भर के सातों आईआईटी में कम से कम 900 फैकल्टी मेंबर्स की कमी झेल है। आईआईएम-ए को भी शिक्षकों की कमी झेलनी पड़ रही है। इंजीनियरिंग शिक्षक मोटी सेलरी की लालच मे कंपनियों को ज्वाइन कर रहे हैं। विश्लेषकों के मुताबिक इससे देश के आर्थिक विकास पर बुरा असर पड़ेगा।

प्रस्तुति : समन्वय डेस्क

आर्थिक निर्देश

ईसाई देशों में इतवार को काम नहीं होता।
जबकि मुस्लिम देशों में शुक्रवार की छुट्टी रहती है।
अजीब सी बात है। है न?
और हमारे देश में?
अरे हम तो धर्म निरपेक्ष देश हैं। तो हम न इतवार को काम करते हैं, न शुक्रवार को और न ही इन दोनों के बीच वाले किसी भी दिन।

आर्थिक निर्देश

सम्पत्ति करदाता
जागें!
आज ही अपना कर जमा करें!
मार्च
31
2008
अंतिम समय की भीड़-भाड़ से बचें!
जब आप अपना सम्पत्ति कर ऑनलाइन
www.mcdpropertytax.in
पर जमा करा सकते हैं
तो इंतजार क्यों?
आप चैक या बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से भी अपना सम्पत्ति–कर संबन्धित क्षेत्रीय कार्यालय में स्थित सम्पत्ति–कर विभाग में सुबह 10.00 बजे से शाम 5.30 बजे तक सभी कार्यदिवसों पर (केवल रविवार और महीने के दूसरे शनिवार को छोड़कर) जमा करा सकते हैं।
संशोधित दिल्ली नगर निगम अधिनियम-2003 के अन्तर्गत सम्पत्ति-कर का भुगतान करना आपका दायित्व है।
किसी भी प्रकार के स्पष्टीकरण हेतु हमारे अधिकारियों से निम्न टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें
29845181, 27051685, 25143373, 23920733, 22501117, 26185460
कर निर्धारण एवं समाहरण विभाग
दिल्ली नगर निगम
दि.न.नि. प्रेस एवं सूचना निदेशालय द्वारा जारी

आर्थिक निर्देश

सम्पत्ति करदाता
जागें!
आज ही अपना कर जमा करें!
मार्च
31
2008
अंतिम समय की भीड़-भाड़ से बचें!
जब आप अपना सम्पत्ति कर ऑनलाइन
www.mcdpropertytax.in
पर जमा करा सकते हैं
तो इंतजार क्यों?

आर्थिक निर्देश

आप **चैक या बैंक ड्राफ्ट** के माध्यम से भी अपना सम्पत्ति–कर संबन्धित क्षेत्रीय कार्यालय में स्थित सम्पत्ति–कर विभाग में सुबह **10.00 बजे से शाम 5.30** बजे तक सभी कार्यदिवसों पर (केवल रविवार और महीने के दूसरे शनिवार को छोड़कर) जमा करा सकते हैं।

संशोधित दिल्ली नगर निगम अधिनियम-2003 के अन्तर्गत सम्पत्ति-कर का भुगतान करना आपका दायित्व है।

किसी भी प्रकार के स्पष्टीकरण हेतु हमारे अधिकारियों से निम्न टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें

29845181, 27051685, 25143373, 23920733, 22501117, 26185460

कर निर्धारण एवं समाहरण विभाग

दिल्ली नगर निगम

दि.न.नि. प्रैस एवं सूचना निदेशालय द्वारा जारी